>

Title : Regarding notices of motion for adjournment to discuss price rise in the country.

अध्यक्ष महोदया : कल कई माननीय सदस्य काम रोको प्रस्ताव पर बोल नहीं पाए थे, मैं अनुरोध करूंगी कि वे आज बोलें और संक्षेप में बोलें तथा इस बारे में बोलें कि यह प्रस्ताव क्यों स्वीकार किया जाए?

श्री शरद यादव (मधेपुरा): महोदया, कल से यह बहस जारी है। कल हमारी विपक्ष की नेता और श्री मुलायम सिंह जी, केवल दो सदस्य बोल पाए थे। कल संसदीय मंत्री की बात को भी हमने सुना था। आप के चैम्बर में भी हमने हर तरह से निवेदन किया। मंत्री जी नियम 58 (2) और 58 (3) का हवाला दे रहे हैं। मैं यही कहना चाहता हूं कि इनके उस नियम को पढ़ने का नज़रिया और हमारे उस नियम को पढ़ने के नज़रिए में ज़मीन आसमान का फर्क है। महंगाई की आग पेट में जल रही है और निरंतर जल रही है। आज तो यह भंयकर है और अगर हम आज सदन में काम रोको प्रस्ताव या स्थगन प्रस्ताव न रखें, तो देश की जनता हमें कभी माफ नहीं करेगी। हम नहीं चाहते कि सदन में बहस के दायरे के बाहर कोई चीज हो। इसलिए हमने आपके चैम्बर में निवेदन किया। संसदीय मंत्री से भी हमने निवेदन किया कि जो तत्काल गंभीर सवाल है, उन्हें उठाया जाए। महंगाई का सवाल तत्काल के लिए भी गंभीर है। महंगाई वर्षों से लोगों का पीछा कर रही है। इस देश में जब महंगाई पीछा करती है तो भूख पीछा करती है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि इस देश के लोग और दुनिया इस सदन की ओर देख रही है और आप सदन की मालिक हैं। मैं मानता हूं कि इनका जो आग्रह या कहना है उससे पहली बार नियम 58(2) और 58(3) की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। इस नियम के परसेप्शन में बहुत फर्क है, ट्रेजरी बेंचिस के संसदीय मंत्री और विपक्ष का एक मत है और हम लोगों का एक मत है। इसके पीछे संपूर्ण तर्क है, पूरी ताकत है। एक तरह से पूरे देश की जनता की हाहाकार करती हुई स्थिति है। हम यहां तो शांत बैठते हैं लेकिन हमारे लिए सदन के बाहर निकलना कठिन हो जाता है। हमारा सदन के बाहर दौरा करना कठिन है। लोग कहते हैं कि आप संसद में इस सवाल को ठीक से उठाते नहीं हैं। मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि इस सदन में नियम की जो व्याख्या बंसल जी कर रहे हैं, वह ठीक व्याख्या नहीं है। इस नियम के तहत स्थगन प्रस्ताव, काम रोको प्रस्ताव में हमारी बात आती है और यह नियम हमारे हक में ज्यादा है इसलिए मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं। यह सवाल सरकार के मन में है कि वोटिंग होगी। आपके पास बहुमत की कमी नहीं है। हम यह सारे नियम छोड़कर इसलिए बात करना चाहते हैं ताकि हम अपना वोट देकर भारत की जनता के सामने गुस्सा जाहिर करें। हम इतिहास के इस मौके पर वोट देकर फर्ज निभाने का काम करना चाहते हैं। हम आपकी इस बात में शरीक नहीं होना चाहते हैं। आपकी मान्यता है कि सब कुछ ठीक किया जबकि हमारी मान्यता है कि चाहे फूड सिक्योरिटी का मामला हो, आपने हर तरह से नीति और पॉलिसी को 60 बरस से पलटा है। मैं इस पर बहस नहीं करना चाहूंगा, जब इस पर बहस होगी तब कहूंगा। मैं इस नियम के तहत कहना चाहता हूं कि नियम आपके द्वारा ज्यादा व्याख्यित होते हैं। दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप अभी काम रोको प्रस्ताव लें। रेल बजट आने वाला है, हम नहीं चाहते किसी तरह से सरकार और देश का काम रोकने का काम करें। हमारे साथियों की राय थी कि इस मामले को आसानी से नहीं जाने देना चाहिए। लेकिन हम लोगों ने प्रयास करके एक मत बनाया कि रेल बजट चलना चाहिए। हम देश चलाना चाहते हैं। आप जिस तरह से आज देश चलाना चाहते हैं हम उसमें राय देना चाहते हैं कि देश किस तरह से चलाया जाना चाहिए। आप नियम 58(2) और 58(3) की व्याख्या करके पूरी तरह से महंगाई की आग के अंगारों पर राख डालकर उसकी ओट लेना चाहते हैं। ओट लेना ठीक नहीं है, देश के लिए ठीक नहीं है, हम सबके लिए ठीक नहीं है इसलिए इस पर बहस होनी जरूरी है। मैं आपसे कहूंगा, मेरी विनती है, देश के करोड़ों लोगों की तरफ से अनुनय-विनय है कि इस स्थगन प्रस्ताव को स्वीकार करके सदन को सुचारु रूप से चलाने का मार्ग प्रशस्त करें। मेरी आपसे यही विनती है और इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): अध्यक्ष महोदया, हमने कल से इसी बात को लेकर सदन में स्थगन प्रस्ताव दिया है। जब आपने पहली बार सारे नेताओं की बैठक बुलाई थी तब भी सारे दलों के नेताओं ने आपसे अनुरोध किया था कि पहली प्राथमिकता इस देश में बढ़ती हुई महंगाई है। इस देश के करोड़ों लोग भूखे पेट सोने के लिए मजबूर हैं, हमें उनकी इस पीड़ा के बारे में चर्चा करनी चाहिए। कल संसदीय कार्य मंत्री ने नियम का हवाला दिया। मैं उस हवाले के संबंध में कहना चाहता हूं कि मानवीय पीड़ा कभी कानून से ऊपर हो जाती है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आज देश में महंगाई का जो आलम है, आज महंगाई से गांव के गरीब परेशान और बेहाल हैं, आज जो निरंतर मूल्यवृद्धि हो रही है, इस पर चर्चा कराये जाने की आवश्यकता है। आज देश में उत्पादकता घटी है और सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि इस देश की जनता ने हम सब लोगों को चुनकर यहां भेजा है, जिनकी आप संरक्षक हैं, इसलिए आपसे बड़ी अपेक्षाएं हैं कि स्पीकर का अपना जो प्रिविलेज है, विशेषाधिकार है, उसका उपयोग करते हुए, सभी विरोधी दलों और अन्य दलों के नेताओं ने जो स्थगन प्रस्ताव दिया है, उसे स्वीकार करके आप देश में बढ़ती हुई महंगाई पर रोक लगाने के लिए इस पर चर्चा कराने की व्यवस्था देंगी। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि आज निरंतर महंगाई बढ़ रही है, तेल के दाम बढ़ रहे हैं। मैं समझता हूं कि इस सबके पीछे तमाम कारण हैं, जिन पर जनता जवाब मांगना चाहती है कि बार-बार इस देश के मंत्री महंगाई रोकने की बात करते हैं, लेकिन फिर भी बार-बार महंगाई बढ़ जाती है। एक बार नहीं कई बार देश के मंत्री ने ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: This will not go on record.

*(Interruptions) â€¦**

MADAM SPEAKER: Please conclude.

श्री दारा सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदया, मैं कल संसदीय कार्य मंत्री की बात को सुन रहा था। इस देश में जो महंगाई बढ़ रही है, वह देश की सरकार की गलत आर्थिक नीतियों के कारण बढ़ रही है और उसे छिपाने के लिए इस देश में प्रदेश सरकारों पर दोषारोपण करने की बात बार-बार जो कह रहे हैं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप समाप्त करिये। अब आप बैठ जाइये।

श्री दारा सिंह चौहान : मैं आपका संरक्षण चाहता हूं और आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि हमने जो स्थगन प्रस्ताव दिया है...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आपकी बात समाप्त हो गई। श्री सुदीप बंदोपाध्याय, आप बोलिये।

श्री दारा सिंह चौहान : इस प्रस्ताव पर चर्चा होनी चाहिए, यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है, यही मैं आपसे अनुरोध करता हूं। ...(व्यवधान) इस देश में जो भूख और

मानवीय पीड़ा है, उसे भी हम देश के लोग जानते हैं, उसे भी मैंने ध्यान में रखा है। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि हमारे स्थगन प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए इस पर चर्चा कराकर देश में निरंतर बढ़ती महंगाई पर रोक लगाने का काम करें। ...(व्यवधान)

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY (KOLKATA UTTAR): Hon. Madam, price rise issue is no doubt a burning issue of this country. People of this country are eagerly waiting to see that this Parliament should discuss this issue with all priority and make some attempts to check the price rise both by the Central and the State Governments. Now the question is under which rule? If it is under Adjournment Motion, Adjournment Motion indicates in the other way, a No-Confidence Motion to the Government. How can a Government agree to a proposal or to a rule which is initiated against the Government? They cannot ever

---

* Not recorded.

accept it. But the Government has accepted that this issue is to be discussed, even after keeping the Question Hour in suspense, under Rule 193. Under Rule 193 we can get a discussion for seven and a half hours. But under Adjournment Motion, we can get only two and a half hours time. Most of the Members are keen to speak on the issue. We fully agree and support that the discussion be initiated under Rule 193. I fully support the proposal moved by Shri Pawan Kumar Bansal.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Madam, the entire Opposition has been demanding and asking not for a discussion on price rice but a discussion under specific rule, that is, Adjournment Motion. When you called the meeting of Leaders of Political Parties, we had seen the mood of the leaders of the entire Opposition. Why are we asking for admission of Adjournment Motion? As per rule also, I can quote Rule 58. It says, "the right to move the adjournment of the House for the purpose of discussing a definite matter of urgent public importanceâ€¦" Is the unprecedented rise in prices of essential commodities not a matter of urgent public importance? Does the Government not consider this a matter of urgent public importance? ...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइये। Nothing will go on record except what Shri Basu Deb Acharia is saying.

*(Interruptions) â€¦**

SHRI BASU DEB ACHARIA : Madam, in fact, no other matter is more important than rise in prices of essential commodities. â€¦ (*Interruptions*) Madam, this is a recent happening also. What is the argument of the Minister of Parliamentary Affairs? His argument is that the prices have been rising since this Government came to power in 2004 and so this is not a matter of recent occurrence. ...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : कृपया आप बैठ जाइये। Achariaji, please be brief.

---

* Not recorded.

SHRI BASU DEB ACHARIA : When we discussed this issue in the first week of December last year under Rule 193, what was the food inflation? At that point of time, food inflation was much less than what we are facing today. It has touched 20 per cent now. Never during the past 26 years, food inflation touched 20 per cent. ...(*Interruptions*) And this Government has decided to increase the price of urea by 10 per cent. This is also a recent happening. ...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Shri Acharia, please be brief. I asked you in the beginning to be brief.

...(*Interruptions*)

SHRI BASU DEB ACHARIA : This will add fuel to the fire.

MADAM SPEAKER: Thank you so much, Achariaji. अब आप बैठ जाइये। Shri Mahtab may speak now.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Madam, this is a Himalayan failure of this Government. ...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Shri Acharia, kindly take your seat.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Madam, we want that this issue concerning the 90 per cent population of our country should be discussed under Rule 184.

अध्यक्ष महोदया : आपका हो गया। आपने अपने सब पाइंट्स रख दिये हैं। Please take your seat Mr. Acharia. Nothing will go on record now except what Mr. Mahtab is going to say.

*(Interruptions) â€¦**

MADAM SPEAKER: Please take your seat. This is not going on record. Shri Mahtab, please start.

*(Interruptions) â€¦**

अध्यक्ष महोदया : कृपा करके आप स्थान ग्रहण कीजिये।

*(Interruptions) â€¦**

---

* Not recorded.

SHRI BANSA GOPAL CHOWDHURY (ASANSOL): Madam, he is always being disturbed in the House. ...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : आप अब बैठ जाइये।

SHRI B. MAHTAB (CUTTACK): Madam Speaker, I may be allowed to speak from this seat.

Madam, the entire Opposition has given notice for Adjournment Motion. ...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on record except what Shri Mahtab says.

*(Interruptions) â€¦**

MADAM SPEAKER: They have taken their seats. You sit down, please.

...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

SHRI B. MAHTAB : Madam, Speaker, at times, in this House we have reflections of Assembly proceedings. But today, we are discussing whether this House is going to deliberate on the Adjournment Motion or not. For the last two days we have discussed this in this House and also in your Chamber. I subscribed to the view that the Adjournment Motion, which has been moved by very many Members of this House, should be accepted, and as per the conditions of the rules, the Government also should be courteous enough to accept it. But at what time? Already, that time has been over.

As far as I understand, I do not want to reveal as to what was transpired in your Chamber but I would only subscribe to the view that the Adjournment Motion has a specific criteria and a specific impact. I would subscribe to the view that has been put forth by the Leader of the Opposition that we have discussed the

---

* Not recorded.

issue of price rise a number of times in this House and in the Upper Chamber of Parliament. But having to have discussion on the

Adjourment Motion has a specific impact not only on the Government but also on the other stakeholders who are responsible for the price rise.

Therefore, I support the view and also request you to consider the discussion on the Adjournment Motion.. ...(*Interruptions*)

श्री अनंत गंगाराम गीते : महोदया, सारे विपक्ष की ओर से महंगाई के मामले पर काम रोको प्रस्ताव दिया गया है। मैं अपनी पार्टी की ओर से काम रोको प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। हम पहली बार इस सदन में यह अनुभव कर रहे हैं कि सारे विपक्ष के साथ-साथ कुछ सत्ता पक्ष के भी घटक दल हैं, जो इस महंगाई के मामले में...(व्यवधान) उन्होंने एडर्जनमैंट मोशन दिया है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बैठ जाइए। आप लोग बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY : I have said that this issue should be discussed under Rule 193. ...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : आप क्यों खड़े हैं? बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : महोदया, हम पहली बार इस सदन में यह अनुभव कर रहे हैं कि विपक्ष के साथ-साथ सत्ता पक्ष के भी कुछ घटक दल हैं, जो महंगाई से पीड़ित हैं। ...(व्यवधान) जिन्होंने काम रोको प्रस्ताव दिया है। ...(व्यवधान) नो कॉन्फीडेंस मोशन दिया है। ...(व्यवधान) जिनके समर्थन पर यह सरकार चल रही है, वे घटक दल भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि आज सारे देश की जनता महंगाई की मार की चपेट में है, महंगाई ने चरम सीमा छू ली है। दो दिन पहले दोनों सदनों के सामने महामहिम राष्ट्रपति जी ने आम आदमी की बात की, लेकिन वह आम आदमी महंगाई के अंदर पिसा जा रहा है। आज उस आम आदमी की क्या स्थिति है, उस गरीब की स्थिति क्या है? आज इस देश में लोग भुखमरी से मर रहे हैं। बेरोजगारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, महंगाई दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। ...(व्यवधान)

महोदया, यह महंगाई का मामला सारे नियमों से ऊपर उठकर है। इस देश में रहने वाले हर आदमी की भूख को पूरा करना, उसको जीवनावश्यक चीजें मुहैया कराना, सरकार की जिम्मेदारी बनती है। सरकार अपनी ज़िम्मेदारी को टाल रही है, अपनी ज़िम्मेदारी से भाग रही है। ...(यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बस, हो गया। धन्यवाद।

श्री अनंत गंगाराम गीते : इसलिए महंगाई के मामले पर कामरोको प्रस्ताव पर ये चर्चा नहीं करना चाहते हैं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : धन्यवाद। श्री नामा नागेश्वर राव।

â€¦(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, यदि यही स्थिति रही तो देश में सिविल वार होगा।

बिना किसी के भड़काए इस देश की जनता भड़केगी। ...(व्यवधान) देश के गोदाम और भंडार लूटे जाएंगे। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप शांत हो जाइए। आपने अपनी बात कह दी है।

â€¦(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : यह देश में होगा और इसके लिए सरकार ज़िम्मेदार होगी। ...(व्यवधान)

संसदीय कार्य मंत्री और जल संसाधन मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल): माननीय सदस्य ज़िम्मेदारी से बात करें। What is he talking? ...(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : जब आदमी भूख से मरेगा तो पेट की आग गरीब को मजबूर करेगी और अनाज के गोदाम लूटे जाएँगे और सरकार इसके लिए ज़िम्मेदार होगी। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप बैठ जाइए। श्री नामा नागेश्वर राव।

â€¦(व्यवधान)

MADAM SPEAKER : Nothing will go on record except what Shri Nama Nageswara Rao is going to speak.

*(Interruptions) â€¦**

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम): माननीय अध्यक्ष महोदया, आज महंगाई का मुद्दा देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके बारे में अपोज़ीशन लीडर ने बात की थी और बाकी सब लीडर्स ने भी इस पर लीडर्स मीटिंग और बीएसी में बात की थी। इस महत्वपूर्ण मुद्दे को आप सबसे पहले अलाऊ करेंगी, ऐसा हम एक्सपैक्ट करते हैं। हम आपके माध्यम से कहना चाहते हैं कि दुनिया में सबसे ज्यादा भूख से पीड़ित लोग हमारे देश में है। 20 प्रतिशत जनसंख्या - करीब 212 मिलियन भूख से पीड़ित लोग भारत में हैं। हम सब

* Not recorded.

लोगों के लिए यह सोचने की बात है। यह दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। फूड प्रोडक्शन दिन पर दिन गिरता जा रहा है। इसके साथ साथ इनफ्लेशन बढ़ता जा रहा है। हर दिन इनफ्लेशन का रेट बढ़ रहा है। यह सबसे महत्वपूर्ण इश्यू है जिस पर हम चर्चा करना चाहते हैं। इसलिए विपक्ष के एडजर्नमैंट मोशन का जो प्रस्ताव है, उसको सपोर्ट करते हुए हम तेलुगुदेशम पार्टी की तरफ से इस एडजर्नमैंट मोशन को तुंत टेकअप किये जाने का निवेदन करते हैं।

श्री लालू प्रसाद (सारण): अध्यक्ष महोदया, यहाँ नियम का हवाला दिया जा रहा है। महंगाई आज देश में इतनी ज्वलंत समस्या है जिससे सभी सैक्शन्स प्रभावित हैं। निम्न वर्ग, मिडिल क्लास, लोअर मिडिल क्लास, किसान, नौजवान, विद्यार्थी - सारा देश महंगाई की मार से कराह रहा है। इसके खिलाफ ऐतिहासिक बिहार बंद भी हुआ जिसमें हमने रेल को एक्ज़ैम्प्ट किया ताकि वह बाधित न हो। मुलायम सिंह यादव सहित देश में बहुत सारे नेताओं ने यह सवाल जनता और लोगों के बीच में उठाया। लोग जन प्रतिनिधियों पर ईंट-डेला फेंक रहे हैं कि तुम लोग क्या कर रहे हो। ...(व्यवधान) इसलिए हम सभी लोगों ने बिना किसी दुराग्रह के इस सवाल पर आपसे आग्रह किया और आपको पूरा अधिकृत किया कि आप इंसाफ करेंगी और कामरोको प्रस्ताव स्वीकार करेंगी। हम लोग काम करने के लिए आए हैं। देश में सबसे बड़ा काम है प्राइस राइज़ को रोकना। माननीय प्रधान मंत्री जी बार-बार मीटिंग करते हैं। हम अखबारों के माध्यम से पढ़ते हैं जिसमें इनका कहना है कि राज्य मदद नहीं कर रहा है। राज्य दिल्ली पर इस बात को फेंक रहे हैं और दिल्ली राज्यों पर इस बात को फेंक रही है। यह मामला कहाँ अटका हुआ है? यूपीए गवर्नमैंट डंके की चोट पर कहती रही कि हमारे पास इतना अनाज हो गया कि रखने की भी जगह नहीं है। संसद के विगत सत्र में खाद्य मंत्री जी से पूछा गया था कि आपके पास कितने दिन का भोजन है? इन्होंने कहा कि आठ महीने का अनाज है। महोदया, इसी देश में प्याज के दाम पर हम लोगों की सरकार चली गई। प्याज 35 रूपये किलो है। चीनी और आलू के दाम भी आसमान छू रहे हैं। मैंने सुना है कि एक मंत्री जी ने कहा है कि लोगों की परचेज़िंग कैपेसिटी बढ़ी है, इसलिए लोग ज्यादा खा रहे हैं। यह विषय तभी आ सकता है, जब आपका हुक्म आएगा। हमारा उद्देश्य सरकार को गिराना नहीं है। गिराने से सरकार गिरेगी भी नहीं। बंसल जी जहां से बोल रहे हैं, वहां जो भी रहेगा, वही भाषा बोलेगा। इसलिए यह ज्यादा दोषी नहीं है, क्योंकि जो आदमी वहां होगा, वह वही बोलेगा।

महोदया, कृपया करके आप इसे देखिए क्योंकि यह बर्निंग इश्यू है। कल को देश में इसे लेकर आग लग गई तो सभी को खामियाज़ा भुगतना पड़ेगा। नियम से पेट नहीं भरता है। पांच सौ आदमी बिहार में भूख से मर गए हैं। यह किसकी जिम्मेदारी है? होर्डिंग और कालाबाज़ारी है। देश में माल है, पैसा दीजिए माल लीजिए।

हमने सुना है कि प्रधानमंत्री जी ने राज्यों के मुख्यमंत्रियों से कहा है कि डीहोर्डिंग करो, पीडीएस को ठीक करो, लेकिन कुछ होता नहीं दिख रहा है। लोग भूख के मारे मर रहे हैं, इसलिए दिल्ली सरकार भी इसके लिए दोषी है और सभी राज्य सरकारें भी दोषी हैं। इसलिए इसे मंज़ूर कीजिए और मंज़ूर करके सभी की बात सुनिए। We are answerable to the people of the country. यह हमारी भी जिम्मेदारी है, केवल सत्तापक्ष की नहीं है। हम लोगों के प्रति ऑन्सरैबल हैं। मीडिया के लोग भी 17 रूपये प्रति किलो आटा खरीद रहे हैं।

आमदनी अठन्नी और खर्चा रूपया,

यह कैसे जी रहा है सब भइया।

इस पर आप लोगों को सोचना होगा। इसलिए कृपया करके इसको मंजूर कर लीजिए। ऐसा नहीं है कि बीजेपी ने दिया है, मुलायम सिंह यादव ने भी दिया है, वामपंथ ने दिया है, शिवसेना ने दिया है और हमारी पार्टी ने भी दिया है। इसलिए काम रोक कर इस पर बहस करवा लीजिए। इसका निदान हम सब को मिलकर करना है कि क्या समाधान हो सकता है? हल्ला-गुल्ला करना हम लोगों का फैशन नहीं है। हम लोगों ने जब एक बार कह दिया है कि हम आपको पूरा कॉआपरेट करेंगे तो आप लोगों को तो इधर कॉआपरेट करना चाहिए। काम रोको प्रस्ताव को मंजूर कीजिए और इस पर बहस करवाइए, यही मेरा निवेदन है।

SHRI GURUDAS DASGUPTA (GHATAL): Madam, we are not discussing price rise. We are discussing the admissibility of Adjournment Motion. We are discussing rules and procedure in the House. One of my best friends, Shri Pawan Kumar Bansal yesterday said that this cannot be discussed under the rule because price rise has been happening for the last 6 years. What he had said is not fully untrue. But the Rule Book says that the Adjournment Motion can be accepted by the Speaker. It does not require the permission of the Government....(*Interruptions*)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: I did not say that....(*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DASGUPTA : It does not require.

I would quote Rule 56, Page 29:

"Matter of urgent public importance (That is the Adjournment Motion) may be made with the consent of the Speaker."

Therefore, Madam, it is totally your prerogative.

The second point is whether it is of recent occurrence. I agree that the price rise is a continuous feature in the country for the last several years. I would tell why it is recent. As per the Government figure for the last four weeks the price of food grains has been increasing by nearly 20 per cent, as never before. Madam, my point is the price of luxury goods is not increasing in the country. The price of automobile is decreasing. The price of air travel is decreasing but the price of *atta* is increasing and that is the recent occurrence.

Secondly, sub-section of the Rule 58 fulfils our argument. Price rise has been unprecedented in the last four weeks as never before and it is the price rise of the food products. It is an explosion of the food prices. Therefore, it is recent.

Thirdly, why do we want Adjournment Motion? It can be a Short Duration Discussion but Adjournment Motion means extraordinary parliamentary device because the situation is extraordinary. The situation in the country is extraordinary. Let my friend, Mr. Bansal place the price rise of the food products which is increasing today to two years back. The Government statistics says that in the last 30 years it has never increased like this. Therefore, the situation is extraordinary and since the situation is extraordinary, we should take recourse to extraordinary parliamentary practice as enshrined in the rule book. This is our right. This is not a gift of the Government. It is a right given by the rule book. Therefore, I would like to know why it cannot be accepted. It is not a question of censure. In that case, a No-Confidence Motion can be brought. We are not for that. We would like to give a message to the country. The country must be given a message by Parliament that the extraordinary situation is being taken note of by the Parliament and Parliament is doing its job by taking this extraordinary method. I am afraid if the Government stands in the way that will give a wrong message to the people. We are answerable to the people, the Government is answerable and the Opposition is also answerable. It will be misunderstood by the people. It will be interpreted as if the Government does not want to recognise it as an extraordinary situation. Mr. Bansal, that will never give a good name to you and neither to the Prime Minister.

Therefore, I urge upon the Speaker of this House to agree to Adjournment Motion considering the extraordinary situation arising out of galloping inflation of food prices during the last four weeks.

Lastly, the Government decision to decrease and reduce fertiliser subsidy is a recent happening. That is going to further accentuate price. The Government is thinking of increasing the price of petroleum products and that will increase the prices. Therefore, it is absolutely recent and it should be accepted by the hon. Speaker in keeping with the highest traditions of the Indian Parliament.

* DR. RATTAN SINGH AJNALA (KHADOOR SAHIB) : Thank you, Madam Speaker. Today, the common man is suffering due to inordinate rise in the prices of essential commodities. The poor people are finding it difficult to make both ends meet. The situation is extraordinary. Kindly accept the notices for Adjournment Motion given by hon. opposition members on the issue of price rise. When the masses are suffering, we should not hide behind rule-books, practices and procedures. The Parliament should send a message to the people that we care for them. We are concerned about them. We should not talk about rule-books just to avoid discussing an issue of urgent public importance. Hon. Speaker Madam, I hope that you will listen to our request for an Adjournment Motion on this issue, so that the plight of the people is voiced in the House and corrective measures are taken by the Government.

---

*English translation of the speech originally delivered in Punjabi